International Journal of Humanities and Social Science Research
ISSN: 2455-2070; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 28-12-2020; Accepted: 27-01-2021; Published: 18-02-2021
www.socialsciencejournal.in
Volume 7; Issue 1; 2021; Page No. 130-134

कानपुर मण्डल में औद्योगिक विकास समस्यायें एवं सम्भावनायेंः एक भौगोलिक विश्लेषण

डॉ. प्रीती दीक्षित
Department of Geography, D.A.V. College Kanpur Nagar, C.S.J.M. University, Kanpur, Uttar Pradesh, India

सारांश
विश्व की अर्थव्यवस्था को दो भागों– कृषि प्रधान एवं औद्योगिक प्रधान में बाँटा गया है। विश्व के सभी राष्ट्रों की इसी के अनुरूप पहचान होती है। उद्योगों की स्थापना और औद्योगिक विकास के स्तर किसी भी देश व राष्ट्र के लिए गौरव की अनुभूति होते हैं। उद्योग अपनी उस शक्ति और सामर्थ्य के बल पर जिन पर न केवल उनका अस्तित्व टिका होता है अपितु राष्ट्र का आर्थिक आधार स्तम्भ भी होते हैं। संक्षेप में हम कह सकते हैं कि औद्योगिक इकाइयाँ गतिशील एवं बहुआयामी अर्थव्यवस्था को सूचित करती हैं। इसी कारण से उद्योग प्रधान देशों को उन्नतिशील देशों की श्रेणी में रखा जाता है।

मूलशब्दः उद्योग, औद्योगिकविकास, अर्थव्यवस्था, उन्नतिशील देश

प्रस्तावना

प्रस्तावित शोध विषय– ''कानपुर मण्डल में औद्योगिक विकास समस्यायें एवं सम्भावनायें : एक भौगोलिक विश्लेषण'' है। विश्व की अर्थव्यवस्था को दो भागों – कृषि प्रधान एवं औद्योगिक प्रधान में बाँटा गया है। विश्व के सभी राष्ट्रों की इसी के अनुरूप पहचान होती है। उद्योगों की स्थापना और औद्योगिक विकास के स्तर किसी भी देश व राष्ट्र के लिए गौरव की अनुभूति होते हैं। उद्योग अपनी उस शक्ति और सामर्थ्य के बल पर जिन पर न केवल उनका अस्तित्व टिका होता है अपितु राष्ट्र का आर्थिक आधार स्तम्भ भी होते हैं। संक्षेप में हम कह सकते हैं कि औद्योगिक इकाइयाँ गतिशील एवं बहुआयामी अर्थव्यवस्था को सूचित करती हैं। इसी कारण से उद्योग प्रधान देशों को उन्नतिशील देशों की श्रेणी में रखा जाता है।

तीव्र औद्योगिक विकास से जहाँ उत्पादन में निरन्तर वृद्धि हो रही है वहीं उत्पादित इकाइयों की गणवत्ता में ह्रास हो रहा है। साथ ही औद्योगिक प्रदूषण, जल प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण, अपशिष्ट प्रदूषण जैसी विकराल समस्यायें मुँह खोल रही हैं। वर्तमान में हो रहे तीव्र औद्योगिक विकास की स्थिति को समझने के लिए औद्योगिक विकास के फलस्वरूप होने वाले विकास तथा ह्रास दोनों पर प्रकाश डालने के लिए शोधार्थिनी ने उपर्युक्त विषय ''कानपुर मण्डल में औद्योगिक विकास समस्यायें एवं सम्भावनायें : एक भौगोलिक विश्लेषण'' चयन किया गया है।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध को नौ अध्यायों में विभक्त किया गया है।

प्रथम अध्याय के अन्तर्गत औद्योगिक विकास की संकल्पना, औद्योगीकरण की संकल्पना, अध्ययन क्षेत्र, अध्ययन के उद्देश्य एवं अध्ययन की आवश्यकता का वर्णन किया गया है।

आज औद्योगिक विकास प्रत्येक क्षेत्र में अपना प्रभाव फैला चुका है। गाँव, नगर, महानगर सब औद्योगिक विकास की चरम सीमा पर है। क्षेत्र की अनुकूल भौगोलिक स्थिति का इसमें महत्वपूर्ण स्थान है। जितनी ही भौगोलिक स्थिति अनुकूल होती है वह क्षेत्र उतनी ही तीव्रता से औद्योगिक विकास करता है। औद्योगिक उत्पादन की प्रतिस्पर्द्धा में औद्योगिक इकाइयाँ प्रतिवर्ष लाखों टन उत्पादन कर रही हैं जिससे औद्योगिक विकास में निरन्तर वृद्धि हो रही है।

उत्तर प्रदेश का 'मानचेस्टर' एवं 'ओसाका' कहा जाने वाला कानपुर उत्तर प्रदेश का सबसे महत्वपूर्ण एवं सर्वाधिक विकसित औद्योगिक क्षेत्र है। कानपुर मण्डल के अन्तर्गत कानपुर नगर, कानपुर देहात, औरैया, इटावा, कन्नौज, फर्रूखाबाद आदि जिलों को सम्मिलित किया गया है। तीव्र गति से औद्योगिक विकास 1860 में औद्योगिक क्रान्ति से प्रारम्भ हुए। भारत में इसका सूत्रपात यद्यपि बाद में हुआ किन्तु कानपुर में इसका सूत्रपात 1803 में सोडा वाटर कम्पनी के साथ ही प्रारम्भ हो गया। धीरे–धीरे औद्योगिक विकास ने आसपास के नगरों को प्रभावित करना प्रारम्भ कर दिया।

कानपुर मण्डल में औद्योगिक इतिहास का प्रारम्भ 1864 से हुआ जब यहाँ पहला सूती वस्त्र उद्योग 'एल्गिन मिल कम्पनी' कानपुर नगर में स्थापित हुआ। बाद के वर्षों में अनेक सूती वस्त्र उद्योगों की स्थापना से यहाँ औद्योगिक वातावरण का निर्माण हुआ। जिसके फलस्वरूप रोलिंग मिल्स, इंजीनियरिंग उद्योग, रसायन, औषधि, पेण्ट्स, खाद्य तेल, जूट, खाद्य संस्करण, इत्र उद्योग आदि विभिन्न उद्योगों की स्थापना हुई। वृहद उद्योगों की स्थापना एवं विकास के कारण उनके साथ–साथ लघु उद्योगों का बड़े पैमाने पर विकास हुआ। वस्त्र उद्योग, चमड़ा उद्योग, खाद्य संस्करण, प्राकृतिक गैस एवं खनिज तेल, यहाँ के पारम्परिक उद्योग हैं। कानपुर मण्डल के औद्योगिक भू–दृश्य पर इनकी प्रमुखता अब भी है। यद्यपि इनका आनुपातिक अंश ह्रासोन्मुख है। इनके स्थान पर रबर, प्लास्टिक, रसायन, मशीनें और परिवहन उपकरणों से सम्बन्धित उद्योगों का वर्चस्व बढ़ता पाया गया है।

अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तावित शोध विषय ''कानपुर मण्डल में औद्योगिक विकास समस्यायें एवं सम्भावनायेंः एक भौगोलिक विश्लेषण'' हेतु शोधार्थिनी के उद्देश्य निम्नलिखित हैंः–

- कानपुर मण्डल के औद्योगिक क्षेत्रों हेतु विकास एवं नियोजन की रूपरेखा प्रस्तुत करना।
- कानपुर मण्डल के औद्योगिक विकास में निजी एवं सार्वजनिक क्षेत्रों की भूमिका का अध्ययन करना।
- कानपुर मण्डल के औद्योगिक विकास के मार्ग में आने वाली समस्याओं से अवगत कराना।
- समस्याओं के निराकरण के लिए तर्कसंगत एवं व्यावहारिक सुझाव प्रस्तुत करना।
- उन उद्योगों का मूल्यांकन करना जिनके विकास की सम्भावनायें भविष्य के गर्त में छिपी हैं।

औद्योगिक विकास पर विभिन्न भूगोलवेत्ताओं ने अपने–अपने विचार प्रस्तुत किए हैं। औद्योगिक विकास के साथ–साथ भूगोलवेत्ताओं ने किसी भी क्षेत्र के औद्योगिक विकास में आने वाली मूलभूत समस्याओं को भी प्रस्तुत किया है, साथ ही समस्याओं के समाधान के लिए उचित सुझाव भी प्रस्तुत किए हैं।

अध्ययन की आवश्यकता

वर्तमान परिस्थितियों में प्रत्येक विकसित एवं विकासशील देश आर्थिक विकास के मार्ग पर अग्रसर होने के लिए प्रयत्नशील है ताकि देश को विभिन्न समस्याओं जैसे निर्धनता, बेरोजगारी आदि से मुक्ति मिल सके। भारत जैसे विकासशील देश की आर्थिक व्यवस्था को सुदृढ़ करने में उद्योगों की महती भूमिका है। उद्योगों की स्थापना व विकास से न सिर्फ तीव्र गति से आर्थिक प्रगति होती है बल्कि भारी संख्या में रोजगार के अवसर भी सुलभ होते हैं। इस प्रकार उद्योगों की अधिकाधिक स्थापना एवं उसके सुचारू रूप से संचालन से बेरोजगारी की समस्या का समाधान किया जा सकता है जो सामाजिक एवं आर्थिक व्यवस्था को सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण सिद्ध होगा।

अध्ययन क्षेत्र की औद्योगिक इकाइयों की बढ़ती हुई रुग्णता चिन्ताजनक विषय है। बढ़ती हुई रुग्णता के कारण औद्योगिक विकास पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है। एक उद्योग की रुग्णता का प्रभाव दूसरे उससे सम्बन्धित उद्योग पर प्रत्यक्ष रूप से पड़ता है। फलतः सम्पूर्ण औद्योगिक चक्र प्रभावित होता है। ऐसी विषम परिस्थिति किसी भी देश व प्रदेश के लिए हितकर नहीं। औद्योगिक इकाइयों को समय पर भुगतान न मिलना, कार्यशील पूँजी न मिलना, अनियमित विद्युत आपूर्ति, प्रबंधकीय अकुशलता आदि उद्योगों की रुग्णता के प्रमुख घटक हैं। रुग्णता के कारण इकाई अपनी क्षमता के अनुसार कार्य नहीं कर पाती है फलस्वरूप घाटे में आने के कारण बंद हो जाती है जिससे उद्योगों में लगे लोगों को बेरोजगारी का सामना करना पड़ता है। भौगोलिक कारकों या अन्य कई परिस्थितियों के कारण कभी–कभी कोई क्षेत्र औद्योगिक विकास के लक्ष्य को प्राप्त कर पाते हैं तो कहीं औद्योगिक विकास अवरूद्ध हो जाता है फलतः क्षेत्रीय असमानता की स्थिति उत्पन्न होती है।

कहते हैं कि ''आवश्यकता आविष्कार की जननी है'' अतः आर्थिक एवं औद्योगिक विकास के लक्ष्य की प्राप्ति के लिए औद्योगिक इकाइयों की स्थापना एवं उसका सुचारू रूप से संचालन आवश्यक हो जाता है। वर्तमान समय में औद्योगिक इकाइयाँ संघर्षशील है या तो बंद हो रही है या बंद होने की कगार पर पहुँच गई है। जिसका कारण विभिन्न प्रतिकूल परिस्थितियाँ हैं।

अतः प्रस्तुत शोध के अध्ययन की प्रमुख आवश्यकतायें अग्रलिखित हैं–

1. औद्योगिक विकास की गति का आकलन एवं विश्लेषण करने के लिए।
2. कानपुर मण्डल के औद्योगिक विकास के मार्ग में आने वाली समस्याओं का गहन अध्ययन करने के लिए।
3. औद्योगिक समस्याओं के समाधान के लिए उपयुक्त सुझाव प्रस्तुत करने के लिए।
4. क्षेत्रीय विषमता को दूर करने के लिए ताकि सभी क्षेत्रों में समान गति से विकास हो सके।
5. औद्योगिक इकाइयों की रुग्णता के कारणों का पता लगाकर उनके निवारण के उपाय प्रस्तुत करने के लिए।
6. पर्यावरण प्रदूषण में सुधार के लिए।
7. उद्योगों को सुरक्षित वातावरण एवं श्रमिकों को बेहतर जीवनशैली देने के लिए।
8. तकनीकी विकास एवं उन्नत प्रशिक्षण के लिए निजी उद्यमियों को प्रेरित करने के लिए।
9. प्राकृतिक संसाधनों एवं मानवीय संसाधनों के समुचित दोहन के लिए।
10. निवेशकों को निवेश के लिए आकर्षित करने के लिए।
11. औद्योगिक विकास के मार्ग से अवरूद्ध हटाकर औद्योगिक विकास के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए।
12. उन उद्योगों का पता लगाने के लिए जिनके विकास की अपार सम्भावनायें अध्ययन क्षेत्र में है।
13. राष्ट्रीय प्रतिष्ठा में वृद्धि के लिए।

द्वितीय अध्याय के अन्तर्गत अध्ययन क्षेत्र की भौगोलिक पृष्ठभूमि को दर्शाया गया है। उत्तर प्रदेश को 17 मण्डलों में विभाजित किया गया है जिसमें कानपुर मण्डल एक औद्योगिक क्षेत्र है। सम्पूर्ण उत्तर प्रदेश को चार आर्थिक क्षेत्रों में बाँटा गया है– पश्चिमी क्षेत्र, केन्द्रीय क्षेत्र, बुन्देलखण्ड और पूर्वी क्षेत्र। कानपुर मण्डल पश्चिमी एवं केन्द्रीय क्षेत्र में सम्मिलित किया गया है। कानपुर मण्डल में 6 जिलों को समाहित किया गया है जो फर्रूखाबाद, कन्नौज, इटावा, औरैया, कानपुर देहात एवं कानपुर नगर है। फर्रूखाबाद, कन्नौज, इटावा व औरैया पश्चिमी क्षेत्र के अन्तर्गत आते हैं तथा कानपुर नगर एवं देहात केन्द्रीय क्षेत्र में स्थित है। उत्तर भारत का मानचेस्टर एवं ओसाका कहा जाने वाला कानपुर एक महत्वपूर्ण औद्योगिक क्षेत्र है।

तृतीय अध्याय में अध्ययन क्षेत्र की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को विश्लेषित किया गया है। सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के अन्तर्गत अध्ययन क्षेत्र के वित्तीय प्रबंधन अर्थात् सरकार व निजी संस्थाओं के उन प्रयासों का अध्ययन किया जाता है जो उद्योगों के लिए वित्त सम्बंधी आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं। इसके अतिरिक्त सरकार द्वारा निर्धारित की गयी नीतियों, औद्योगिक आस्थानों की सुरक्षा व्यवस्था व शक्ति के संसाधन एवं यातायात व संचार सुविधाओं आदि का अध्ययन किया जाता है। कानपुर मण्डल की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि का अध्ययन निम्न बिन्दुओं पर आधारित है–वित्तीय प्रबन्धन, औद्योगिक सुरक्षा, सरकारी औद्योगिक नीतियाँ, शक्ति संसाधन, यातायात एवं संचार।

चतुर्थ अध्याय में उद्योगों के प्रकार एवं प्रतिरूप का वर्णन किया गया है। उत्तर प्रदेश भारत के औद्योगिक मानचित्र पर एक महत्वपूर्ण गंतव्य स्थल है। उद्योगों का वर्गीकरण विविध रूपों में किया जा सकता है चूँकि उत्तर प्रदेश जैसे विशाल राज्य में उद्योगों की अधिकता है। अतः यहाँ के उद्योगों को व्यवस्थित करने के लिए जरूरी है कि किसी मानक के आधार पर उनका वर्गीकरण किया जाए। भारत में जनगणना एवं सांख्यिकीय विभाग ने उद्योगों के अन्तर्गत वस्तुओं के उत्पादन, प्रक्रमण और मरम्मत को समाहित किया है।

पंचम अध्याय के अन्तर्गत औद्योगीकरण के विविध स्तरों का वर्णन है। भारत की सामाजिक–आर्थिक स्थिति को देखते हुए यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि आज भारत को औद्योगीकरण की अत्यधिक आवश्यकता है। आज विश्व के विकसित देशों की दौड़ में साथ रहने के लिए देश का तीव्र, संतुलित एवं उत्तरोत्तर औद्योगीकरण हमारी एक अनिवार्य आवश्यकता है।

विश्व के जिन देशों में औद्योगीकरण की गति मंद है, उन देशों को आज बहुत बड़ी सीमा तक अन्तर्राष्ट्रीय औद्योगिक अर्थव्यवस्था वाली अर्थव्यवस्थाओं पर निर्भर रहना पड़ता है। उनके आयात में वृद्धि की प्रवृत्ति पायी जाती है जिससे उनका भुगतान संतुलन बिगड़ जाता है और अन्ततः अर्थव्यवस्था पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। वर्तमान समय वैज्ञानिक एवं तकनीकी प्रगति का समय है। अतः इस स्थिति में कोई भी देश औद्योगिक दृष्टि से पीछे नहीं रहना चाहता है। स्वतंत्र भारत के संविधान में निर्धारित नीति निर्देशक सिद्धान्तों में औद्योगीकरण की आवश्यकता एवं महत्व को स्वीकारा गया है।

भारत में तीव्र एवं संतुलित औद्योगीकरण निम्न कारणों से अति आवश्यक है–

- औद्योगीकरण का विस्तार अतिरिक्त रोजगार अवसर प्रदान करने में सहायक होता है।
- औद्योगीकरण से उपलब्ध संसाधनों का पूर्ण उपयोग सम्भव हो जाता है।
- औद्योगीकरण से देश की कुल राष्ट्रीय आय में वृद्धि के साथ–साथ उत्पादकता में भी वृद्धि की जा सकती है।
- औद्योगीकरण के माध्यम से देश के विभिन्न क्षेत्रों में उ़द्योगों का उचित एवं न्यायपूर्ण वितरण सम्भव हो पाता है।
- औद्योगीकरण के कारण उद्योगों का आधुनिकीकरण एवं अर्थव्यवस्था में विविधता को बढ़ावा मिलता है।
- औद्योगीकरण से शिक्षा प्रशिक्षण, अनुसंधान एवं शोध कार्यों को प्रोत्साहन मिलता है।
- औद्योगीकरण के माध्यम से कृषि पर जनसंख्या की निर्भरता को कम किया जा सकता है।
- औद्योगीकरण के माध्यम से निर्यातों में वृद्धि की जा सकती है और आयातों को नियंत्रित किया जा सकता है।

कानपुर नगर एवं देहात को उच्च औद्योगिक गहनता की कोटि प्रदान की गयी है इसका प्रमुख कारण यह है कि कानपुर मण्डल के जनपद कानपुर नगर एवं कानपुर देहात (माती) में वृहद एवं लघु उद्योगों का बाहुल्य है। कानपुर नगर एवं कानपुर देहात की आधरिक संरचना वृहद एवं लघु उद्योगों के विकास के अनुकूल है। प्रस्तुत शोध ग्रन्थ के अध्याय–षष्ठ के अन्तर्गत कानपुर मण्डल के विभिन्न उद्योगों का पृथक–पृथक विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया गया है। इस अध्याय में कानपुर मण्डल के वस्त्र उद्योग, कृषि यंत्र उद्योग, मशीने एवं परिवहन उपकरण उद्योग, खाद्य तेल सम्बन्धी उद्योग, पेन्टिग उद्योग, रसायन उद्योग, चमड़ा उद्योग, इंजीनियरिंग उद्योग, जूट उद्योग, सुगन्ध उद्योग व अन्य कुटीर उद्योग पर गहन एवं विस्तृत अध्ययन कर उनकी समस्याओं से अवगत कराया गया है, साथ ही उन समस्याओं के समाधान के लिए सुझाव भी प्रस्तुत किए है। कानपुर मण्डल में इन उद्योगों की भावी सम्भावनायें भी प्रस्तुत की गयी हैः–

1. वस्त्र उद्योग
2. ऊनी एवं रेशमी वस्त्र उद्योग
3. कृषि यंत्र उद्योग
4. मशीनें एवं परिवहन उपकरण उद्योग
5. खाद्य तेल सम्बन्धी उद्योग
6. पेन्टिग उद्योग
7. रसायन उद्योग
8. चमड़ा उद्योग
9. इंजीनियरिंग उद्योग

कानपुर मण्डल में इंजीनियरिंग उद्योग के अन्तर्गत मशीनरी कलपुर्जे एवं इलेक्ट्रिक पार्ट्स के कारखाने में निरन्तर वृद्धि हो रही है। कानपुर मण्डल में इंजीनियरिंग उद्योग के अन्तर्गत एयर क्राफ्ट से लेकर साइकिल के विभिन्न पुर्जों का निर्माण होता है। एयरक्राफ्ट के लिए कानपुर का हिन्दुस्तान एयरक्राफ्ट लिमिटेड सर्वप्रमुख है। यहाँ भारतीय वायुसेना के लिए वायुयान का निर्माण किया जाता है। कानपुर मण्डल में इंजीनियरिंग उद्योग का अद्भुत विकास हुआ है।

जूट उद्योग

कानपुर मण्डल में जूट उद्योग के विकसित करने का श्रेय जे0के0 समूह को जाता है क्योंकि कानपुर मण्डल के जनपद कानपुर नगर में सन् 1929 में जे0के0 जूट मिल्स की स्थापना जे0के0 समूह द्वारा ही की गयी थी जो आज भी उत्पादन कार्य सम्पन्न कर रहा है। तत्पश्चात् 1936 में कानपुर में दूसरा जूट कारखाना स्थापित हुआ जो कानपुर जूट उद्योग के नाम जाना जाता है।

प्राकृतिक गैस और खनिज तेल उद्योग

गैस अथारिटी ऑफ इण्डिया लिमिटेड की स्थापना कानपुर मण्डल के जनपद औरैया के पाता में 16 अगस्त 1984 को की गयी थी। गेल ने वर्ष 2010–11 में 23776 करोड़ रूपये का कारोबार किया। गेल इण्डिया लिमिटेड का पंजीकृत कार्यालय 16 भीकाजी काम्प्लेक्स आर0के0 पुरम नई दिल्ली में स्थापित है।

खाद्य सामग्री उद्योगसुगन्ध उद्योग

अन्य कुटीर उद्योगः कुटीर उद्योग छोटे पैमाने के उद्योग होते हैं। कुटीर उद्योगों में छोटे स्तर पर उत्पादन किया जाता है जो स्थानीय माँग पर आधारित होता है, रोजगार सृजन की दृष्टि से कुटीर उद्योगों को कृषि के बाद अर्थात् दूसरा स्थान प्राप्त है। दस्तकारी उद्योग, दोना पत्तल उद्योग, राखी उद्योग, मोमबत्ती उद्योग, दियासलाई उद्योग, अगरबत्ती उद्योग, बिन्दी उद्योग आदि कई उद्योग कुटीर उद्योग के रूप में कानपुर मण्डल में सफलतापूर्वक संचालित किये जा रहे हैं। कानपुर मण्डल में कुल 6290 कुटीर उद्योग हैं जिनमें 24471 व्यक्तियों को रोजगार प्राप्त है। इसके अतिरिक्त अन्य कुटीर उद्योग जैसे दोना–पत्तल उद्योग, अगरबत्ती उद्योग, मोमबत्ती उद्योग, दियासलाई उद्योग, राखी उद्योग, बिन्दी व अन्य भी विशेष प्रगति नहीं कर सके, केवल स्थानीय माँग की पूर्ति का माध्यम बनकर रह गये हैं। अतः सरकार को खादी ग्रामोद्योग, यूपिका हैण्डलूम, हथकरघा बोर्ड आदि संस्थाओं के माध्यम से कुटीर उद्योगों के विकास के लिए विशेष प्रयत्न करने चाहिए ताकि कानपुर मण्डल में कुटीर उद्योग फल–फूल सकें जो नितान्त आवश्यक है। अतः वर्तमान प्रदेश सरकार को कुटीर उद्योगों के महत्व को ध्यान में रखते हुए इनके विकास की योजनाओं पर विशेष ध्यान देकर उन्हें सफल बनाने के लिए प्रयत्नशील रहना चाहिए ताकि कानपुर मण्डल में कुटीर उद्योग विकास के शिखर को छू सकें।

अध्याय सप्तम में अध्ययन क्षेत्र की औद्योगिक समस्याओं को दर्शाया गया है। किसी भी राष्ट्र व समाज के आर्थिक विकास के लिए जहाँ औद्योगीकरण एक वरदान है वहीं उचित प्रबंधन में असफलता के चलते एक अभिशाप भी है। आज प्रत्येक विकसित एवं विकासशील देश द्रुत गति से आर्थिक विकास करना चाहता है ताकि उसे निर्धनता, बेरोजगारी, मुद्रा स्फीति, आदि जैसी ज्वलन्त समस्याओं से मुक्ति मिल सके।

कानपुर मण्डल की औद्योगिक समस्यायें

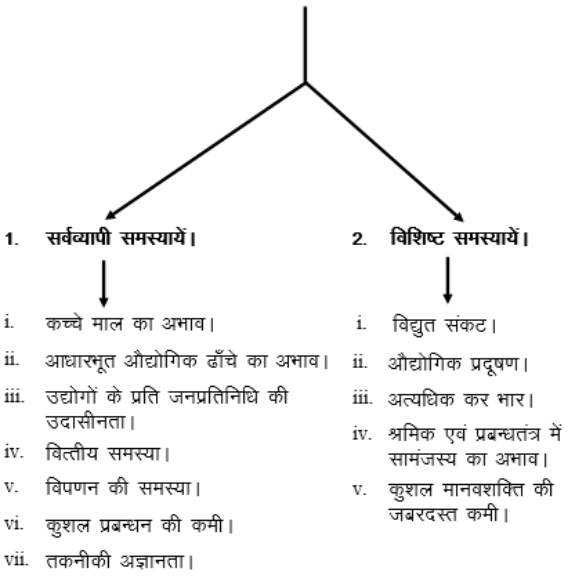

अध्याय अष्टम में अध्ययन क्षेत्र की औद्योगिक सम्भावनाओं का वर्णन किया गया है। उत्तर प्रदेश की औद्योगिक नगरी का दर्जा प्राप्त करने वाले कानपुर का औद्योगिक स्वरूप आज शीर्ष पर हैं। सन् नब्बे के दशक में डंकन्स, लाल इमली, जे0के0 कॉटन, एल0एम0एल0 आदि बड़ी इकाइयों के बंद होने का सिलसिला सा चल गया एवं औद्योगिक उन्नति की दर में लगावट गिरावट ही देखी गय औद्योगिक इलाकों की स्थिति मूलभूत सुविधाओं के मामले में बेहतर हुई हैं। औद्योगिक इलाकों में औद्योगिक विकास की सम्भावनायें तभी दृष्टिगोचर होंगी जब वहाँ निम्नलिखित मूलभूत आवश्यकतायें पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध होगी–

- पर्याप्त मात्रा में कच्चे माल की उपलब्धि।
- शक्ति के संसाधनों की उपलब्धि।
- परिवहन एवं संचार के साधनों की उपलब्धि।
- कुशल एवं अकुशल मानव शक्ति की उपलब्धता।
- बाजार की निकटस्थ उपलब्धता।
- अनुकूल औद्योगिक वातावरण आदि।

जिन क्षेत्रों में उपरोक्त वर्णित सुविधायें पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध है वहाँ औद्योगिक विकास की पर्याप्त सम्भावनाये हैं। कानपुर मण्डल में औद्योगिक विकास की भावी सम्भावनाओं को निम्न बिन्दुओं द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है–

- कानपुर मण्डल में ग्रामीण बेरोजगारी की कुछ विशिष्ट समस्यायें है, जैसे– मौसमी बेरोजगारी, जो एक व्यापक समस्या है। कानपुर मण्डल में कुटीर लघु उद्योगों के विकास की पर्याप्त सम्भावनायें है, परन्तु इसके लिए एक व्यापक एवं निश्चित योजना तैयार करना नितान्त आवश्यक है जिससे ग्रामीण बेरोजगारी की समस्या के समाधान के साथ–साथ कुटीर एवं लघु उद्योगों का विकास भी हो सकेगा।
- यदि कानपुर मण्डल में उद्योगों की कार्यकुशलता एवं उत्पादकता में वृद्धि की जाए तो सार्वजनिक क्षेत्र के उद्योग अपने निश्चित आर्थिक उद्देश्य को आसानी से प्राप्त कर सकते है।
- कानपुर मण्डल एक कृषि प्रधान क्षेत्र होने के कारण कृषि पर आधारित उद्योगों का विकास यहाँ आसानी से सफलतापूर्वक किया जा सकता है।

यदि कानपुर मण्डल के उद्यमी अपनी औद्योगिक इकाइयों का आधुनिकीकरण कर उत्पाद की उत्पादन लागत को कम करके उत्पाद की गुणवत्ता में सुधार कर लें तो वह दिन दूर नहीं जब कानपुर मण्डल राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में विद्यमान प्रतियोगिता का आसानी से सामना कर सकेगा।

शोध प्रबन्ध के अन्तिम अध्याय में औद्योगिक विकास हेतु नियोजन, निष्कर्ष एवं सुझाव प्रस्तुत किये गये हैं। वर्तमान युग में नियोजन मानव जीवन का अभिन्न अंग बन गया है और कोई भी ऐसा कार्य नहीं है जिसमें सफलता प्राप्त करने के लिए निश्चित मात्रा में नियोजन की आवश्यकता नहीं पड़ती।

संक्षेप में कानपुर मण्डल के औद्योगिक विकास के लिए मुख्य रूप से आसान एवं सस्ती ब्याज दर पर पूँजी निवेश, कच्चे माल की आपूर्ति, तकनीकी एवं अन्य मामलों में परामर्श, कुशल प्रशिक्षित श्रमिक, उत्पादों के लिए बाजार उपलब्ध कराना आदि क्षेत्रों में विशेष कदम उठाये जाने चाहिए, साथ ही परम्परागत कुटीर एवं लघु उद्योगों के संरक्षण एवं विकास पर भी बल दिया जाना चाहिए।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात औद्योगिक विकास के लिए उठाये गये कदमों के फलस्वरूप भारत में बड़े पैमाने पर औद्योगिक विकास हुआ। कानपुर मण्डल में भी औद्योगिक विकास की गति तीव्र हुई फलस्वरूप आर्थिक विकास की प्रक्रिया तेज हुई है और यहाँ के निवासियों का जीवन स्तर सुधरा है। नये–नये उद्योगों की स्थापना से रोजगार के अवसरों में वृद्धि हुई है। यह औद्योगीकरण का ही परिणाम है कि बड़ी संख्या में लोगों के पास पक्के मकान हैं इतना ही नहीं अनेक उपयोगी वस्तुओं जैसे–जूता, कपड़ा, घड़ी, वाहन, टी0वी0 फ्रिज, कम्प्यूटर, लैपटाप आदि की उपलब्धता बढ़ी है। सड़क रेलमार्ग, बिजली एवं संचार के साधन आदि के विस्तार से रोजगार के अवसर एवं जीवन की गुणवत्ता में सुधार हुआ है, कृषि सहित अनेक क्षेत्रों में हम आत्मनिर्भर भी हुए हैं। दिये गये उपायों को अपनाकर हम निःसन्देह कानपुर मण्डल की औद्योगिक इकाइयों की समस्त समस्याओं का समाधान कर औद्योगिक विकास की गति को तीव्र कर सकेंगे।

संदर्भ सूची

1. Awasthi RK. Urban Development and Metropolitics in India, Allahabad: Chugh Publication, 1985.
2. Chatterji AC. Industries of United Provinces, Allahabad, 1980.
3. Kudesia VP. Industrial Pollution, Meerut: Pragati Publication, 1989.
4. Maheshwari BP. Industrial and Agricultural Development in India, 1942.
5. Goel MM. Industries and Pollution Control Policies Processes and Problems, Jaipur: Raj Pustak Mandir, 1992.
6. Khan FI, Abbasi SA. Risk Assessment in Chemical Processes Industries, New Delhi, 1998.
7. Maheshwari AK. 'Treatment of Fertilizer Industry Waste, a study of Identification, M.Tech. Thesis, H.B.T.I., Kanpur.
8. Mookkiah Soundarapandian. New Economic Policy and Rural Development, Serial Publication, 2006.
9. Reddy YG. Rural Development in India: Scope for Industrial Development, Serials Publication, 2010.
10. Shukla SR. 'A Comprehensive Study of Refuse disposal system in Kanpur City'. M. Tech. Thesis, H.B.T.I., Kanpur.
11. Singh SN. 'Planning & Development of an Industrial Town: A study of Kanpur, Mittal Publication, 1990.
12. Suryanarayana C, V Krishna Mohan. Small Industry Development in India: The outlooks, Anmol Publication Pvt. Ltd, 2005.
13. Yadav CS. 'Rural-Urban Fringe' (Volume of Perspectives in Urban Geography), Concept Publishing Company, 1987.
14. मामोरिया, चतुर्भुज (2007) ''भारत का भूगोल''। साहित्य भवन पब्लिकेशन्स, आगरा।
15. कौशिक, एस0डी0 (1998) ''आर्थिक भूगोल के सरल सिद्धान्त'' रस्तोगी पब्लिकेशन्स, मेरठ।
16. वर्मा, बाबूलाल (2008) ''आर्थिक उदारीकरण का एक दशक'' पुस्तक प्रकाशन– लघु उद्योग सेवा संस्थान–107 कालपी रोड, कानपुर।
17. मिश्र, जगदीश नारायण (2008) ''भारतीय अर्थव्यवस्था'' पुस्तक प्रकाशन– किताब महल, सरोजनी नायडू मार्ग, इलाहाबाद।
18. Industrial Dexvelopment in U.P. Directorate of Industries, U.P, 2010- 2011.
19. Annual Report 'Fragrance and Flavour Development Centre, Kannauj, 2010-2011.
20. सांख्यिकी डायरी, उत्तर प्रदेश (2011)
21. पत्रिका, औद्योगिक एवं सेवा क्षेत्र निवेश नीति – उत्तर प्रदेश, 2011
22. मण्डलीय सांख्यिकी पत्रिका, 2010–11

23. जिला औद्योगिक प्रोफाइल, 2010–11 फर्रूखाबाद
24. जिला औद्योगिक प्रोफाइल, 2010–11 कन्नौज
25. जिला औद्योगिक प्रोफाइल, 2010–11 इटावा
26. जिला औद्योगिक प्रोफाइल, 2010–11 औरैया
27. जिला औद्योगिक प्रोफाइल, 2010–11 कानपुर देहात (माती)
28. जिला औद्योगिक प्रोफाइल, 2010–11 कानपुर नगर
29. पत्रिका–औद्योगिक सम्भाव्यता सर्वेक्षण प्रतिवेदन, एम0एस0एम0ई0 विकास संस्थान–107, औद्योगिक आस्थान कालपी रोड, कानपुर 2010–11
30. पत्रिका–उत्तर प्रदेश की पंचवर्षीय योजनाएं– 2010–11
31. पत्रिका–वार्षिक उद्योग सर्वेक्षण–2009–10
32. पत्रिका–स्मारिका : स्वर्ण जयन्ती 1961–2011, उत्तर प्रदेश राज्य औद्योगिक विकास निगम लिमिटेड, लखनपुर, कानपुर
33. उत्तर प्रदेश के औद्योगिक विकास प्रगति समीक्षा वर्ष 2010–11
34. दैनिक जागरण, कानपुर से प्रकाशित।
35. अमर उजाला, कानपुर से प्रकाशित।